Faculty Name – Vikas Kumar Tiwari

College Name – Shakuntalam Institute of Teacher's Education, Sasaram

Class – B.Ed. 1st year

Paper – C-3 (Learning and Teaching)

Unit – 1.

Topic – अधिगम और बुद्धि (Learning and Intelligence)

Part – 1

अधिगम और बुद्धि

(Learning and Intelligence)

बुद्धि शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम फ्रांसिस गाल्टन ने सन् 1885 ई० में किया।

अर्थ :- बुद्धि में व्यक्ति की वे मानसिक एवं ज्ञानात्मक योग्यताएँ सम्मिलित है जो उसे जीवन की वास्तविक समस्याओं को सुलझाने में सहायता देती है और उसके आनन्द पूर्ण एवं संतुष्ट जीवन यापन में सहायक होती है।

परिभाषा :-

बुद्धि की परिभाषा शिक्षाविदों एवं मनोवैज्ञानिकों ने अपने-अपने ढंग से अलग-अलग तरीके से दी है। फ्रीमैन (Free man) ने बुद्धि की अनेक परिभाषाओं का अध्ययन और विश्लेषण किया और कहा कि इन सभी परिभाषाओं को तीन वर्गों में बाटा जा सकता है —

1. समायोजन करने की योग्यता के रूप में बुद्धि :-

बुद्धि वह योग्यता है जिससे व्यक्ति अपने व्यवहार को इस प्रकार पुनर्गठित करता है कि वह नवीन परिस्थितियों में अधिक उपयुक्त एवं प्रभावपूर्ण ढंग से कार्य कर सके।

स्टर्न के अनुसार — " बुद्धि जीवन की नवीन परिस्थितियों तथा समस्याओं के अनुरूप सामान्य समायोजन करने की योग्यता है।"

बर्ट के अनुसार — "बुद्धि अपेक्षाकृत नई परिस्थितियों में समायोजन करने की जन्मजात क्षमता है।"

2. सीखने की योग्यता के रूप में बुद्धि :—

बुद्धि शीघ्रता से व व्यापकता से नवीन ज्ञान प्राप्त करने की योग्यता है। बुद्धिमान व्यक्ति वह व्यक्ति है जो अत्यन्त शीघ्रता से नवीन ज्ञान को आत्मसात् कर लेता है।

बकिंघम के अनुसार — "बुद्धि सीखने की योग्यता है।"

डियरबोर्न के अनुसार — "बुद्धि अधिगम करने की क्षमता अथवा अनुभवों से लाभ उठाने की योग्यता है।"

3. अमूर्त चिंतन के रूप में बुद्धि :—

बुद्धि विभिन्न परिस्थितियों में प्रत्ययों, संकेतों तथा प्रतीकों का प्रभावपूर्ण ढंग से प्रयोग करने की क्षमता है।

टरमन के अनुसार — " व्यक्ति उतना ही बुद्धिमान होता है जितनी उसमें अमूर्त चिन्तन की योग्यता है।"

बुद्धि की विशेषताएँ :-

बुद्धि की विशेषताएँ निम्नवत हैं—

1. बुद्धि जन्मजात शक्ति है।
2. बुद्धि ज्ञानअर्जन की शक्ति है।
3. बुद्धि समस्याओं का समाधान करने की शक्ति है।
4. बुद्धि अच्छे - बुरे और नैतिक - अनैतिक में अन्तर करने की शक्ति है।
5. बुद्धि वातावरण के साथ सामंजस्य करने की शक्ति है।
6. बुद्धि चिन्तन करने, तर्क करने और निर्णय करने की शक्ति है।
7. बुद्धि पर वंश परम्परा और वातावरण दोनों का प्रभाव पड़ता है।
8. बुद्धि का विकास जन्म से लेकर किशोरावस्था तक होता है।

बुद्धि के प्रकार
(Types of Intelligence)

ई० एल० थार्नडाइक (E.L.Thorndike) एवं गैरेट ने बुद्धि को निम्नलिखित तीन वर्गों में विभाजित किया है—

1. मूर्त बुद्धि / यांत्रिक बुद्धि / स्थूल बुद्धि / गामक बुद्धि :-

इस बुद्धि से तात्पर्य विभिन्न वस्तुओं को समझने तथा उनका प्रयोग करने की योग्यता से है। यह वास्तविक परिस्थितियों को समझने तथा उनके अनुकूल व्यवहार करने की योग्यता से है। इस बुद्धि के द्वारा व्यक्ति की रुचि यन्त्रों, मशीनों और उनके कलपुर्जों को बनाने व चलाने में होती है। इस बुद्धि में निपुण व्यक्ति अच्छ इन्जीनियर, मैकेनिक, कारीगर, वास्तुकार, व्यापारी इतिहाकार आदि।

2. अमुर्त बुद्धि / सूक्ष्म बुद्धि :-

अमूत बुद्धि से अभिप्राय शाब्दिक तथा गणितीय संकेतों को समझने व प्रयोग करने की योग्यता से है। लिखने, पढ़ने तथा तर्किक चिंतन में अमूर्त बुद्धि की आवश्यकता होती है। ऐसे बुद्धि वाले व्यक्ति प्रायः कलाकार, चिन्तक, वैज्ञानिक, दार्शनिक, साहित्यकार, वकील, चित्रकार आदि।

3. सामाजिक बुद्धि (Social Intelligence) :-

सामाजिक बुद्धि से अभिप्राय व्यक्तियों को समझने तथा उनके साथ व्यवहार करने की योग्यता से है। इस बुद्धि के द्वारा व्यक्ति

में सामाजिक कार्यों में भाग लेने की रुचि पैदा होती है। सामाजिक बुद्धि में निपुण व्यक्ति अच्छा सामाजिक कार्यकर्ता, नेता आदि होता है।

बुद्धि को निर्धारित करने वाले कारक

(Factors determining Intelligence)

बुद्धि को निर्धारित करने वाले कारकों के सम्बन्ध में विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने विभिन्न प्रयोग किये हैं। इन प्रयोगो के आधार पर यह कारक निम्नवत है—

1. बुद्धि एवं वंशानुक्रम :- 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में ब्रिटिश वैज्ञानिक सर-फ्रांसिस गाल्टन (Fransis Galton) ने अनेक महान व्यक्तियों के पारिवारिक इतिहास का अध्ययन किया तथा परिणाम यह पाया कि उच्च कोटि की बुद्धि प्रायः कुछ विशिष्ट कुलों में ही दृष्टिगोचर होती है। बाद में टरमन, गोडार्ड आदि मनोवैज्ञानिको ने भी इसे सही सिद्ध किया।

2. बुद्धि एवं वातावरण :-

20 वीं शताब्दी के चौथे दशक आयोवा वि० वि० में किये गये अनुसंधान कार्यों से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर बुद्धि तथा वातावरण से सम्बन्ध स्थापित किया जाने लगा। विलियम्स बैंजामिन ब्लूम, कार्ल बाइट, क्लार्क व क्लार्क आदि मनोवैज्ञानिकों ने अपने-अपने अध्ययनों से वातावरण की महत्ता को सिद्ध

करने का प्रयास किया। इन लोगों ने बताया कि अनुकूल वातावरण में ही मानसिक योग्यता का विकास होता है तथा अनुपयुक्त वातावरण में रहने से बुद्धि कुंठित हो जाती है।

3. वंशानुक्रम तथा वातावरण की अंतःक्रिया :—

जैवरसायन, प्रजननशास्त्र विकास, मनोवैज्ञानिक आदि क्षेत्रों में विकास प्रक्रिया का गहन अध्ययन किया गया तथा इसके निष्कर्षों के आधार पर वंशानुक्रम व वातावरण की अन्तर्क्रिया के दृष्टिकोण का विचार प्रतिपादित किया गया। वर्तमान समय मे यही मत अधिक मान्य है। इस मत के अनुसार बौद्धिक विकास के लिए वंशानुक्रम तथा वातावरण दोनो ही समान रूप से महत्वपूर्ण एवं आवश्यक हैं।